राष्ट्रीय हिंदी पाक्षिक समाचार पत्र

गजब हरियाणा

सच्ची व स्टीक खबर, आप तक

RNI No. HARHIN/2018/77311 संपादक : जरनैल सिंह सह संपादिका : सृष्टि देवी छायाकार : राजरानी PKL NO.: 0184/2024-26

WWW.GAJABHARYANA.COM 1 दिसंबर 2025, वर्ष : 08, पृष्ठ : 04, अंक : 17, मूल्य : 7 रुपए, वार्षिक मूल्य : 150 रुपए Email: gajabharyananews@gmail.com

ज्ञान विचार

जो मंजिल के दीवाने होते हैं, नींद उनके इरादों को नहीं रोक सकती।

3.4 किलोमीटर क्षेत्र में लहराता सरोवर ब्यां कर रहा है अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव की गाथा

ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर सरोवर की लहराती लहरें भी सरोबार होकर स्वागत करती नजर आ रही शिल्पकारों और लोक कलाकारों की अदभुत कला को, बीन का लहरा और ढोल नगाड़ों की थाप से खुद को समर्पित करता नजर आ रहा है ब्रह्मसरोवर, विभिन्न राज्यों से आए लोक कलाकारों ने युवाओं और पर्यटकों में भरा जोश

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ. जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र। 3.4 किलोमीटर की परिधि में समाहित लहराता ब्रह्मसरोवर भी इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव की गाथा को ब्यां करता हुआ नजर आ रहा है। इस सरोवर के घाटो पर टेराकोटा रिलीफ वर्क से निर्मित प्रतिमाएं भी पुराणों में लिखी हुई महाभारत की इस गाथा को ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर जीवंत करने का काम कर रही है। इतना ही नहीं ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर सरोवर की लहराती लहरें भी सरोबार होकर इन शिल्पकारों की अद्भुत शिल्पकला और कलाकारों की लोक संस्कृति का स्वागत करती हुई नजर आ रही है।

21 दिन तक चलने वाले इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 में ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर दूसरे राज्यों से आए लोक कलाकारों की लोक कला ने सभी पर्यटकों को मंत्रमुग्ध करने का काम किया है। इतना ही नहीं जब इस पावन तट पर बीन का लहरा और ढोल नगाडे की थाप पर सरोवर की लहरें भी उछल-उछल कर खुद को समर्पित करती हुई नजर आ रही है। इस महोत्सव में विभिन्न राज्यों से आए हुए लोक कलाकारों ने अपने-अपने पद्रेश की लोक संस्कृति से महोत्सव में आने वाले प्रत्येक पर्यटक और युवाओं में जोश भरने का काम किया है। इस महोत्सव में पर्यटक शिल्पकारों की अनोखी शिल्पकला के कदरदान होकर जमकर खरीददारी कर रहे है।

ब्रह्मसरोवर के इस पावन तट पर संगीत और शिल्पकला का अनोखा संगम देखने को मिल रहा है। इस महोत्सव में आने वाला हर कोई इसकी जमकर प्रशंसा करता हुआ नजर आ रहा है, 3600 मीटर की लम्बाई और 1500 मीटर की चौड़ाई में समाहित इस सरोवर के चारों तरफ लोक संस्कृति और शिल्पकारों की शिल्प कला ने महोत्सव की फिजा का रंग बदलने का काम किया है। इस महोत्सव में विभिन्न राज्यों से आए हुए लोक कलाकारों ने अपने-अपने प्रदेशों की विलुप्त हुई लोक कला को प्रदर्शित कर महोत्सव में आने वाले पर्यटकों को आकर्षित करने का काम किया है। ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर 15 नवंबर से 5 दिसंबर 2025 तक चलने वाले इस सरस और शिल्प मेले ने अपनी विश्व पटल पर एक अलग पहचान बनाने का काम किया है। इस महोत्सव की गूंज देश प्रदेश ही नहीं अपितु विदेशों में भी सुनाई दे रही है।

कुरुक्षेत्र महाभारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहां कौरवों और पांडवों के बीच महाभारत का युद्ध लड़ा गया था। इस युद्ध का उल्लेख महाभारत के वनपर्व में है और इसे धर्मक्षेत्र कहा गया है। कुरुक्षेत्र का नाम राजा कुरु के नाम पर पड़ा, जिन्होंने इस भूमि पर इंद्र से वरदान मांगा था कि यह पुण्य भूमि कहलाएगी। यहीं पर भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने शक्तिपीठ मां भद्रकाली मंदिर में किया पूजन

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ. जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र। उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने कुरुक्षेत्र के विश्व प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां भद्रकाली मंदिर में पूजा अर्चना की। उपराष्ट्रपति ने देशवासियों के सुख, शांति और समृद्धि के लिए कामना की है। अहम पहलू यह है कि मां भद्रकाली मंदिर के पीठाधीश पंडित सतपाल महाराज ने परम्परा अनुसार उपराष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन से पूजा अर्चना करवाई।

उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी रविवार को शक्तिपीठ मां भद्रकाली मंदिर में पहुंचे। यहां पर उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने मंत्रोच्चारण के बीच श्री देवीकूप की पूजा की और मां भद्रकाली के दर्शन कर प्राचीन परम्परा को निभाया और विशेष पूजा के साथ परिक्रमा कर चांदी के घोड़े मां भद्रकाली के चरणों में अर्पित किए। इसी दौरान अर्जुन कृत मंत्रों का जाप किया। पीठाध्यक्ष ने उपराष्ट्रपति को माता की मां शब्दाक्षर को दर्शाते हुए लाल शक्ति चुनरी, चांदी मुकुट व पुष्प माला से आशीर्वाद दिया। पीठाध्यक्ष ने उपराष्ट्रपति को पूजा के लिए उन्हें मां भद्रकाली जी का सिद्ध अष्ठधातु अष्ठभुजा स्वरूप भी प्रदान किया और शक्तिपीठों के प्रतीक के रूप में अभिमंत्रित शक्ति त्रिशूल भेंट किया। श्री देवीकूप की परिक्रमा के उपरान्त उपराष्ट्रपति तथा मुख्यमंत्री ने मां भद्रकाली के गर्भ गृह में मां भद्रकाली का आह्वान कर उनके द्वारा षोडशोपचार मंत्रों के साथ मां का भाव-भक्तिपूर्ण पूजन किया और कमल पुष्प की माला अर्पित की।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को मंदिर के पीठाधीश पंडित सतपाल महाराज ने सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। इस पूजा अर्चना में पंडित सतपाल शर्मा के साथ शिमला देवी, सुनील शर्मा, स्नेहिल शर्मा, डॉ एमके मोदगिल, प्रमोद वालिया, संजय शर्मा, हेमराज, आशीष, संजीव ने भी मंदिर की परम्परा निभाते हुए मेहमानों का स्वागत किया। इस मौके पर उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल, शशांक गोयल, विषाखा राणा, हेमराज शर्मा, देवी दयाल शर्मा, सुरेन्द्र शर्मा, देवेन्द्र गर्ग, संजीव मित्तल, हितैष चौधरी, ऋषि तोमर, गोविन्द सिंगला, आशीष दीक्षित, ममता रानी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

अंबाला में छेड़छाड़ के आरोपियों की छित्तर परेड करने वाले थानेदार को कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने दी शाबाशी

शेर सिंह/गजब हरियाणा

अंबाला। युवती से छेड़छाड़ और उसके परिवार से मारपीट करने वाले बदमाशों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने वाले कैंट थाना प्रभारी सुरेंद्र को हरियाणा के ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने सराहा है। मंत्री विज ने शनिवार को एक कार्यक्रम के दौरान एसएचओ सुरेंद्र की पीठ थपथपाकर कहा कि ऐसे कर्मठ अधिकारियों से ही समाज में कानून-व्यवस्था का संदेश जाता है। अनिल विज ने कहा कि अंबाला छावनी में किसी भी कीमत पर गुंडागर्दी नहीं चलने दी जाएगी। महिलाएं और बच्चियां बेझिझक घर-दफ्तर जा सकें, यह सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो भी कानून तोड़ेगा, पुलिस उसे बिल्कुल नहीं छोड़ेगी।उल्लेखनीय है कि कुछ दिन पहले एक युवती ने अपने माता-पिता के साथ मंत्री विज की जनसुनवाई में पहुंचकर छेड़छाड़ और मारपीट की शिकायत दर्ज कराई थी। इस पर मंत्री ने कैंट थाना पुलिस को सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए थे। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए शुक्रवार को पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया, उनके सिर मुंडवाए और उन्हें बाजारों में पैदल घुमाकर मौके पर जांच करवाई। पकड़े गए युवकों में एक हिस्ट्रीशीटर भी शामिल था।मंत्री विज ने कहा कि यह कार्रवाई समाज के लिए चेतावनी है कि महिलाओं की अस्मिता से खिलवाड़ करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।

यूनेस्को मुख्यालय में अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बोले—यह भारत के लिए गौरव का क्षण

एजेंसी

पेरिस। संविधान दिवस के अवसर पर भारत के लिए गर्व का पल दर्ज हुआ, जब पेरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय में डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का भव्य अनावरण किया गया। यह क्षण न केवल भारत के संविधान के प्रति वैश्विक सम्मान को दर्शाता है, बल्कि इसके प्रमुख शिल्पकार अंबेडकर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिली मान्यता का प्रतीक भी है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 'X' पर इस ऐतिहासिक घटना पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए इसे 'भारत के लिए अत्यंत गौरव का क्षण' बताया।

उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर की विचारधारा और उनके योगदान ने भारतीय लोकतंत्र को सशक्त नींव दी है, जो आज भी करोड़ों लोगों को प्रेरणा देती है।संविधान दिवस के उपलक्ष्य में नई दिल्ली के संसद भवन के ऐतिहासिक सेंट्रल हॉल में राष्ट्रीय समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रपति ने की, जबकि उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्रियों समेत अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान से हुई और समापन राष्ट्रपति द्वारा संविधान की प्रस्तावना के सामूहिक वाचन के साथ हुआ। अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने कहा कि संविधान भारत की लोकतांत्रिक आत्मा है और नागरिकों का कर्तव्य है कि वे न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल सिद्धांतों को जीवन में अपनाएं।संविधान के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संसदीय कार्य मंत्रालय ने MyGov के सहयोग से 'हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान' नामक राष्ट्रव्यापी अभियान भी शुरू किया है। इसके तहत नागरिकों में संविधान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए निबंध लेखन, ब्लॉग प्रतियोगिता, ऑनलाइन क्विज़ और प्रस्तावना वाचन जैसी गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।यह अवसर भारत की संवैधानिक विरासत और डॉ. अंबेडकर के दूरदर्शी नेतृत्व को विश्व पटल पर सम्मानित करने का सशक्त उदाहरण बन गया है।

जाति-भेद की दी दीवार गिराई: नागौर के देवाराम जाखड़ ने वाल्मीकि परिवार की बेटी की शादी करवा पेश की अनूठी मिसाल

गजब हरियाणा/ब्यूरो

नागौर। नागौर जिले के चाऊ गांव में 29 नवम्बर को एक ऐसी शादी सम्पन्न हुई, जिसने समाज में इंसानियत और समानता का एक नया संदेश दिया। गांव के निवासी देवाराम जाखड़, जिन्हें लोग स्नेहपूर्वक देवजी के नाम से जानते हैं, ने वाल्मीकि समाज की अनाथ बेटी पुष्पा की शादी अपने घर में अपनी बेटी की तरह धूमधाम से करवाई।पुष्पा के माता-पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं।

करीब चार साल पहले मां और छह माह पहले पिता का देहांत हो गया था। परिवार में छोटे भाई-बहन रह गए। ऐसे कठिन समय में गांव के समाजसेवी देवाराम जाखड़ ने उसकी शादी का संपूर्ण जिम्मा उठाया। देवाराम ने न केवल विवाह का पूरा खर्च स्वयं वहन किया, बल्कि विवाह समारोह अपने घर जाखड़ सदन में आयोजित किया। वर व वधू पक्ष की अनुमति से उन्होंने विवाह कार्ड में भी यही स्थल जाखड़ सदन लिखवाया। समारोह में वे सभी रस्में निभाई गई, जो परंपरागत रूप से एक जाट परिवार में होती हैं। फेरे घर के आंगन में हुए और रस्मों के बाद पुष्पा की डोली भी वहीं से रवाना की गई।देवाराम ने विवाह कार्ड को भी एक सामाजिक संदेश का माध्यम बनाया। उसमें समाज सुधारकों और जननायकों-महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर, बिरसा मुंडा, भगत सिंह, कार्ल मार्क्स और सर छोटूराम के प्रेरणादायक संदेश छपवाए। देवाराम का कहना है कि जब परिवर्तन करना है, तो केवल आर्थिक मदद नहीं, बल्कि जाति, धर्म और नस्ल के भेदों को मिटाकर सही अर्थों में शिक्षित होने का परिचय देना चाहिए। देवाराम जाखड़ का परिवार भी इस विचारधारा को साकार करता है। उनके दो बेटे सरकारी सेवाओं में हैं, एक सीआईएसएफ में तो दूसरा भारतीय वायुसेना में तैनात है। उनकी पत्नी आंगनबाड़ी केन्द्र में कार्यरत हैं, जबकि बेटी पढ़ाई कर रही है। पहले प्राइवेट नौकरी करने वाले देवाराम अब खेती करते हैं।पुष्पा की शादी डीडवाना के पास उदरासर निवासी राम के साथ तय हुई है, जो दसवीं पास हैं। दोनों परिवारों की सहमति और समाज के सहयोग से यह विवाह न केवल सम्पन्न हुआ, बल्कि मिसाल बन गया। देवाराम जाखड़ का यह कदम यह साबित करता है कि सच्ची शिक्षा किताबों में नहीं, बल्कि व्यवहार में झलकती है। ऐसी घटनाएं समाज को जोड़ती हैं, विभाजन नहीं करतीं और यही वास्तविक प्रगति का मार्ग है।

आधार कार्ड अपडेट के बारे, जानें .....

आधार कार्ड में जन्मतिथि केवल एक बार ही पूरी तरह अपडेट कराई जा सकती है, दूसरी बार बदलाव के लिए विशेष अनुमति आवश्यक होती है। वहीं, एड्रेस या पता को आप कितनी बार चाहे अपडेट करवा सकते हैं, लेकिन हर बार वैध दस्तावेज देना अनिवार्य होता है। आधार में इन दोनों ही डेमोग्राफिक बदलावों के लिए 75 रुपये फीस चुकानी होती है।

आधार में जन्मतिथि अपडेट की नियमावली

UIDAI के अनुसार, आधार कार्ड पर जन्मतिथि का जो रिकॉर्ड होता है वह अनुमानित होता है और इसे प्रमाणिक दस्तावेज की तरह नहीं माना जाता। इसलिए जन्मतिथि में बदलाव की अनुमति सिर्फ एक बार दी जाती है। दूसरी बार बदलाव के लिए स्पेशल परमिशन जरूरी होती है। जन्मतिथि अपडेट के लिए जन्म प्रमाण पत्र, पासपोर्ट या 10वीं-12वीं की मार्कशीट जैसे दस्तावेज जरुरी होते हैं।पता (एड्रेस) अपडेट के नियमपता या एड्रेस को आधार कार्ड में कई बार बदला जा सकता है। इसके लिए हर बार वैध एड्रेस प्रूफ डॉक्यूमेंट (जैसे बिजली बिल, बैंक स्टेटमेंट आदि) देना होता है। अपडेट के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों विकल्प मौजूद हैं।

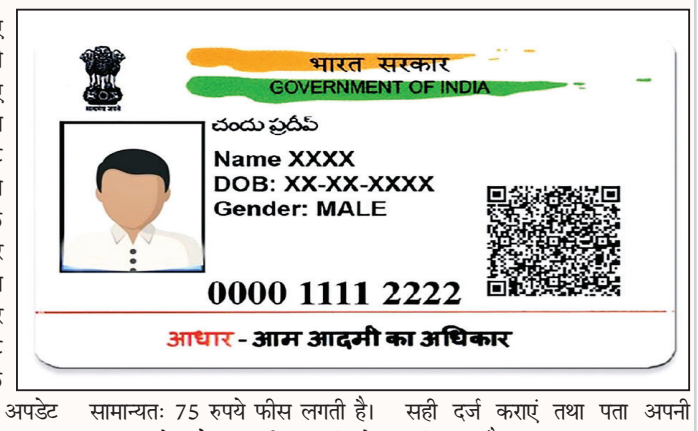

फीस एवं अन्य अपडेट

आधार में डेमोग्राफिक अपडेट (जैसे नाम, पता, जन्मतिथि) के लिए सामान्यतः 75 रुपये फीस लगती है। नाम अपडेट दो बार की अनुमति में आता है, जबकि फोटो अपडेट पर कोई सीमा नहीं होती। बायोमेट्रिक अपडेट के लिए अलग से फीस लगती है। इन नियमों के तहत लोग अपने आधार कार्ड की जन्मतिथि एक बार सही दर्ज कराएं तथा पता अपनी सुविधा और आवश्यकता अनुसार कई बार अपडेट करवा सकते हैं। नाम बदलवाने पर भी दो बार तक बदलाव की अनुमति रहती है। सभी अपडेट के लिए प्रमाणिक और सही दस्तावेज देना अनिवार्य है।

संपादकीय.....

आतंकवाद के बढ़ते खतरेः भारत की आंतरिक सुरक्षा पर नया संकट

देश में बढ़ती आतंकवादी गतिविधियां आज केवल सुरक्षा का नहीं, बल्कि लोकतंत्र, विकास और सामाजिक सौहार्द का सबसे बड़ा परीक्षण बन चुकी हैं। यह आग सीमाओं से पार आकर हमारी बस्तियों, विश्वविद्यालयों, साइबर दुनिया और सोच तक पहुंच रही है।

आज आतंकवाद केवल सीमा पार घुसपैठ या बड़े धमाकों तक सीमित नहीं है, बल्कि 'अर्बन टेररिज़्म', 'लोन वुल्फ अटैक' और डिजिटल कट्टरपंथ जैसी नई शक्लों में सामने आ रहा है। दिल्ली के लालकिले के पास हाल की कार ब्लास्ट की घटना ने साफ कर दिया कि आतंकी अब प्रतीकात्मक राष्ट्रीय स्थलों को निशाना बनाकर मनोवैज्ञानिक दहशत की रणनीति अपना रहे हैं। पाकिस्तान प्रायोजित आतंक के साथ साथ देश के भीतर पनपती घरेलू कट्टरपंथी प्रवृत्तियां सुरक्षा तंत्र के सामने दोहरी चुनौती बनकर खड़ी हैं।

भारत में आतंकवाद की जड़ें राजनीतिक, धार्मिक, जातीय, वैचारिक और सामाजिके आर्थिक असंतोष की जटिल जमीन पर पनपी हैं। बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, हाशिये पर धकेले गए समुदाय, भ्रष्टाचार, कमजोर शासन और आपराधिक होती राजनीति युवाओं को पहचान, बदले और 'न्याय' के नाम पर हिंसक रास्तों की ओर मोड़ देती है। सीमा पार से पोषित जिहादी नेटवर्क हों या भीतर से उपजे नक्सली वामपंथी समूह, दोनों ने स्थानीय शिकायतों को हथियार बनाकर उन्हें वैश्विक आतंकी एजेंडे से जोड़ दिया है।

पिछले एक दशक में भारत ने आतंकवाद के प्रति 'जीरो टॉलरेंस' और 'नई सामान्य स्थिति' की नीति अपनाते हुए सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और हालिया ऑपरेशन सिंदूर जैसे जवाबी कदमों से यह संदेश दिया है कि आतंक की कीमत अब सीमा के पार भी चुकानी पड़ेगी। पुलवामा के बाद बालाकोट और पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान व क़ब्ज़ाक्षेत्र में आतंकी ठिकानों पर की गई सटीक सैन्य कार्रवाई ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब आतंक और उसके आका अलगे अलग नहीं माने जाएंगे।

आंतरिक मोर्चे पर वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों की संख्या घटकर बीस से भी कम रह जाना और नक्सली हिंसा में भारी कमी आना इस बात का प्रमाण है कि सुनियोजित, लक्ष्ये उन्मुख सुरक्षा नीति परिणाम दे सकती है।

आतंकवाद के मामलों में भारत दुनिया के सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में रहा है, जहां 2010 के बाद से एक ओर वामपंथी और उत्तरे पूर्वी उग्रवाद में कमी दर्ज हुई, वहीं जम्मू कश्मीर और शहरी क्षेत्रों में नई तरह के खतरों का उदय दिखा। आधिकारिक और स्वतंत्र अध्ययनों के अनुसार चरमपंथी हिंसा, विशेषकर नक्सल हिंसा, की घटनाएं 2010 के आसपास के लगभग दो हजार वार्षिक स्तर से घटकर कुछ सौ तक आ गई हैं, जबकि इसी अवधि में सीमापार घुसपैठ के प्रयास और शहरों में स्लीपर सेल सक्रियता चिंता का विषय बने हुए हैं। 2023 की तुलना में 2024 में सांप्रदायिक दंगों में हुई लगभग 84 प्रतिशत वृद्धि ने यह भी दिखाया कि आतंक और नफरत की राजनीति एक दूसरे को पोषित करती हैं।

आतंकवाद केवल बंदूक से नहीं, विचार से पैदा होता है, और विचार की जमीन अक्सर नफरत, भेदभाव और ध्रुवीकरण से तैयार होती है। जब राजनीतिक दल तात्कालिक लाभ के लिए समुदायों को बांटते हैं, जब धार्मिके सामाजिक नेता जिम्मेदारी की बजाय उकसावे की भाषा अपनाते हैं, तब वे अनजाने में वही वैचारिक जगह खाली छोड़ देते हैं जिसे बाद में आतंकी संगठन भरते हैं। मीडिया और सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही फेक न्यूज, घृणा भाषण और साजिशी आख्यान युवाओं का मन ज़हर से भरते हैं, जहां से अगला कदम वर्चुअल कट्टरपंथ से वास्तविक हिंसा तक पहुंचने में देर नहीं लगती। कानूनी, खुफिया और न्यायिक सुधार की जरूरत क्कजैसे कड़े कानून आतंकवाद से निपटने के लिए जरूरी औजार हैं, लेकिन इनका इस्तेमाल पारदर्शी, जवाबदेह और न्यायसम्मत न हुआ तो यही कानून अल्पसंख्यकों और असहमति की आवाजों के दमन का औजार भी बन सकते हैं। खुफिया एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय, रियले टाइम सूचना साझाकरण, साइबरे निगरानी की आधुनिक तकनीक और सीमा प्रबंधन में सुधार के बिना आतंकी नेटवर्क की बदलती रणनीतियों का मुकाबला संभव नहीं है। समान रूप से, आतंक से जुड़े मामलों के त्वरित और निष्पक्ष निस्तारण के लिए विशेष अदालतें, गवाह संरक्षण और फॉरेंसिक क्षमता में निवेश लोकतंत्र की नैतिक वैधता को मजबूत करेगा।

आतंकवाद पर विजय केवल सेना और पुलिस नहीं, एक जागरूक समाज, संवेदनशील राजनीति और न्यायपूर्ण शासन ही दिला सकते हैं। स्कूलों कॉलेजों में शांति, संवैधानिक मूल्यों और वैज्ञानिक सोच पर आधारित नागरिक शिक्षा, रोजगारोन्मुखी कौशल विकास, और कट्टरपंथ की चपेट में आए युवाओं के पुनर्वासने पुनर्समाजीकरण कार्यक्रम, दीर्घकालीन समाधान की कुंजी हैं। भारत को चाहिए कि सख्त सुरक्षा उपायों के साथे साथ, संवाद, विकास, समान अवसर और सामाजिक न्याय को आतंक के खिलाफ अपने सबसे शक्तिशाली हथियार के रूप में पहचाने–क्योंकि एक न्यायपूर्ण और समावेशी राष्ट्र ही आतंकवाद की प्रयोगशाला नहीं, उसके अंत का उदाहरण बन सकता है।

रिटायरमेंट के बाद भारत के मुख्य न्यायाधीश को मिलती हैं ये विशेष सुविधाएं

नए सीजीआई सूर्यकांत ने संभाली बागडोर, बीआर गवई ने कायम की सादगी की मिसाल

गजब हरियाणा/ब्यूरो

नई दिल्ली। देश को शनिवार को नया मुख्य न्यायाधीश (सीजीआई) मिल गया है। राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जस्टिस सूर्यकांत को भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ दिलाई। उन्होंने जस्टिस बीआर गवई का स्थान लिया। सूर्यकांत अब देश की न्यायपालिका की सर्वोच्च जिम्मेदारी संभालेंगे। जस्टिस सूर्यकांत कई ऐतिहासिक फैसलों का हिस्सा रहे हैं–जिनमें अनुच्छेद 370 को निरस्त करने से जुड़े मामले, पेगासस स्पाइवेयर जांच और बिहार मतदाता सूची के पुनरीक्षण जैसे संवेदनशील विषय शामिल

गवई ने पेश की मिसाल

रिटायरमेंट के बाद जस्टिस बीआर गवई ने सादगी और मर्यादा की अनूठी मिसाल पेश की। शपथ कार्यक्रम समाप्त होने के बाद उन्होंने अपने लिए आई आधिकारिक काली मर्सिडीज का उपयोग नहीं किया और अपनी निजी कार से ही अपने घर लौटे। उनका यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण माना गया क्योंकि वे चाहते थे कि नए मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत को पहले दिन से ही आधिकारिक वाहन मिल सके। गवई ने स्पष्ट कहा कि वे किसी भी प्रकार की पोस्ट-रिटायरमेंट सरकारी जिम्मेदारी नहीं लेंगे।

रिटायर सीजेआई को मिलती हैं ये प्रमुख सुविधाएं

भारत के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीशों को सरकार की ओर से कई प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, ताकि उन्हें गरिमापूर्ण जीवन जीने में कोई कठिनाई न हो।

-रिटायर सीजेआई को दिल्ली में रेंट-फ्री टाइप-7 आवास छह महीने के लिए मिलता है।
-सुरक्षा के तौर पर उनके घर के बाहर एक साल तक 24 घंटे सुरक्षा कर्मी तैनात रहते हैं।
-पांच साल तक निजी सुरक्षा गार्ड की सुविधा दी जाती है।
-न्याय विभाग के अनुसार, रिटायरमेंट के बाद सीजेआई को सालाना 16.8 लाख रुपये पेंशन और हर महीने लगभग 1.4 लाख रुपये महंगाई राहत के रूप में प्राप्त होते हैं।
-इसके अतिरिक्त 20 लाख रुपये ग्रेच्युटी दी जाती है।
-उन्हें जीवनभर के लिए एक नौकर और ड्राइवर की सुविधा दी जाती है।
-रिटायरमेंट के दिन से एक वर्ष तक सचिवालय सहायता उपलब्ध कराई जाती है।
-हवाई अड्डों पर उन्हें प्रोटोकॉल सुविधा और औपचारिक सम्मान प्राप्त होता है।

संविधान और मुख्य न्यायाधीश की भूमिका

भारत के मुख्य न्यायाधीश न केवल संवैधानिक मामलों में बल्कि जनहित याचिकाओं और राष्ट्रीय महत्व के निर्णयों में भी अग्रणी भूमिका निभाते हैं। न्यायपालिका की स्वतंत्रता और जनता के मौलिक अधिकारों की रक्षा का यह पद संविधान के तहत अत्यंत सम्माननीय और जिम्मेदारीपूर्ण माना जाता है। मुख्य न्यायाधीश का कार्यकाल आमतौर पर छोटा होता है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति आयु 65 वर्ष निर्धारित है और नियुक्ति परंपरा के अनुसार वरिष्ठता के क्रम में होती है।

न्यायपालिका की साख और जनविश्वास

न्यायपालिका की साख बनाए रखने में रिटायर्ड सीजेआई जैसे गवई की सादगी भरी मिसालें महत्वपूर्ण हैं, जो जनता में न्याय व्यवस्था के प्रति विश्वास को मजबूत करती हैं। ऐसी घटनाएं दिखाती हैं कि उच्च पदों पर बैठे व्यक्ति भी सरकारी संसाधनों का न्यूनतम उपयोग कर लोकसेवा की भावना को जीवंत रखते हैं। नए सीजीआई सूर्यकांत से उम्मीद है कि वे इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए न्याय के उच्च मानदंड स्थापित करेंगे।नई पारी की शुरुआत के साथ अब न्यायपालिका के उच्च पद पर सूर्यकांत से देश को अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों की उम्मीदें जुड़ गई हैं।

रात में आती है सूखी खांसी, तो जान लें ये घरेलू उपाय! झटपट मिलेगा आराम

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। बदलते मौसम में कई तरह की परेशानियां भी सामने आती हैं। जैसे गले मे खराश होना, जुकाम होना और सूखी खांसी होना। बता दें कि कई बार लोगों को शाम होते ही खांसी आना शुरू हो जाती है। सूखी खांसी ना सिर्फ गले में दर्द देती है बल्कि ये आपकी नींद में भी खलल डाल सकती है। आइए जानते हैं कि रात में सूखी खांसी क्यों आती है। इसके लक्षण और इसे कैसे रोका जा सकता है।

सूखी खांसी किन कारणों से होती है?

आपको बता दें कि सूखी खांसी में कफ और बलगम नहीं निकलता है। गले में खराश, गला सूखा होना और चिड़चिड़ापन जैसा महसूस होता है। आइए जानते हैं सूखी खाँसी के आम कारण जिनकी वजह से ये हो सकती है।

एलर्जी

-पोस्टनासल ड्रिप
-गैस्ट्रोएसोफेगल रिफ्लक्स ज़ोग (जीईआरडी)
-दमे का दौरा
-स्मोकिंग
-वायरल इंफेक्शन
-कुछ पुरानी फेफड़ों की बीमारियां
-कुछ दवाएं
-सूखी खांसी के घरेलू उपाय

हाइड्रेटेड रहें

सूखी खांसी को रोकने के लिए आप खुद को हाइड्रेटेड रखें। हर्बल चाय, सूप, चाय, गर्म फलों के रस और यहाँ तक कि गर्म पानी भी सूखी खांसी के लक्षणों से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं।

शहद और नींबू

शहद में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट सूखी खांसी से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं। वहीं नींबू में पाया जाने वाला विटामिन सी भी आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। आप गले में खराश से राहत पाने के लिए एक चम्मच शहद को दो चम्मच नींबू के रस के साथ मिलाकर इसका सेवन कर सकते हैं।

अदरक

अदरक में भी सूजन रोधी गुण पाए जाते हैं। 20-30 ग्राम पिसी हुई अदरक की जड़ को एक कप गर्म पानी में शहद या नींबू के रस के साथ भिगोकर चाय बना सकते हैं। यह सूखी, गैर-अस्थमा वाली खांसी को आराम पहुँचाने में मदद कर सकती है।

अनार

अनार के छिलके में सूजन-रोधी गुण होते हैं और गर्म पानी में भिगोने पर यह खांसी का एक प्रभावी उपाय बन जाता है।

(अस्वीकरणः सलाह सहित यह सामग्री केवल सामान्य जानकारी प्रदान करती है। यह किसी भी तरह से योग्य चिकित्सा राय का विकल्प नहीं है। अधिक जानकारी के लिए हमेशा किसी विशेषज्ञ या अपने चिकित्सक से परामर्श करें। गजब हरियाणा इस जानकारी के लिए ज़िम्मेदारी का दावा नहीं करता है।)

मंत्री श्रुति चौधरी ने यमुना जल परियोजनाओं में तेजी लाने की, की मांग

गजब हरियाणा ब्यूरो/चंडीगढ़। हरियाणा की सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री श्रुति चौधरी ने कहा कि ऊपरी यमुना पुनरीक्षण समिति से जुड़े सभी अंतर्राज्यीय जल परियोजनाओं की प्रगति को तेज करना बेहद जरूरी है। उन्होंने 1994 के जल-बंटवारा समझौते यमुना जल प्रबंधन तथा रेणुका, किशाऊ और लखवार जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं की धीमी गति पर चिंता जताई। इन परियोजनाओं के समय पर पूर्ण होने से हरियाणा और दिल्ली की भविष्य की जल आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल की अध्यक्षता में नोएडा सेक्टर 62 में आयोजित ऊपरी यमुना पुनरीक्षण समिति की 9वीं बैठक मे सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री श्रीमती श्रुति चौधरी ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि किशाऊ परियोजना उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के बीच विद्युत घटक की लागत साझेदारी को लेकर विवाद के कारण रुकी हुई है।

फोटोग्राफी में स्टार्टअप और करियर दोनों की अपार संभावनाएं मौजूदः प्रो. महासिंह पूनिया

सृष्टि/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा 19 अगस्त 2025 को आयोजित फोटोग्राफी प्रतियोगिता के विजेताओं को गुरुवार को नगद पुरस्कार राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों की प्रतिभा, रचनात्मकता और तकनीकी दक्षता की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य में और ऊंचाइयां हासिल करने के लिए प्रेरित किया गया। प्रतियोगिता में फाइन आर्ट विभाग की संजना ने अपनी उत्कृष्ट कला दृष्टि और तकनीकी निपुणता के दम पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। जियोग्राफी विभाग की अंजलि को द्वितीय स्थान तथा फाइन आर्ट विभाग के मोहित को तृतीय स्थान हासिल हुआ। विजेताओं को क्रमशः 3100/-, 2100/- तथा 1100/- की नगद राशि देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतियोगिता में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने पर फाइन आर्ट विभाग के सागर तथा जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के लक्ष्य बंसल को 500/- की सांत्वना राशि प्रदान की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी तथा कहा कि फोटोग्राफी आज के समय का तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है, जिसमें स्टार्टअप और करियर दोनों की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। डॉ. महासिंह पूनिया ने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय ऐसे आयोजनों के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच देने के लिए निरंतर प्रयासरत है, ताकि वे न सिर्फ शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि व्यावसायिक जीवन में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें। इस अवसर पर डॉ. रोशन मस्ताना, डॉ. तपेश किरण सहित अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

तुलसी के पौधे को सर्दियों में सूखने से बचाएं?

हमारे देश में हर दूसरे घर में तुलसी का पौधा पाया जाता है। धार्मिक महत्व से अलग तुलसी को सेहत के लिए भी बेहद अच्छा माना जाता है। ऐसे में लोग तुलसी के पत्तों की हर्बल चाय या काढ़ा बनाकर पीना पसंद करते हैं। हालांकि, सर्दियां आते ही तुलसी की ग्रोथ एक जगह रुक जाती है और पौधा मुझाने लगता है। अगर आपके घर में मौजूद पौधे के साथ भी ऐसा हो रहा है, तो ये आर्टिकल आपके लिए मददगार हो सकता है। यहां हम आपको 5 बेहद आसान टिप्स बता रहे हैं, जिन्हें अपनाकर आप ठंड के मौसम में भी तुलसी के पौधे को हरा-भरा रख सकते हैं। तुलसी के पौधे को सर्दियों में सूखने से बचाने के लिए कुछ बातें ध्यान रखें जिनमें कुछ बस 5 आसान काम करें ।

सर्दी में कैसे रखें तुलसी के पौधे का ध्यान?

नंबर 1- फूल और बीज समय पर काटें

सर्दियों में तुलसी में अक्सर छोटे फूल या बीज (मंजरी) दिखने लगते हैं। इन्हें तुरंत काट देना चाहिए। मंजरी आने पर पौधा बीज बनाने में ऊर्जा लगाता है और ग्रोथ रुक जाती है। ऐसे में समय-समय पर मंजरी हटाते रहें, इससे पौधे की ग्रोथ और बेहतर होती है।

नंबर 2- पानी जरूरत के हिसाब से दें

तुलसी को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है। खासकर सर्दियों में मिट्टी देर से सूखती है, इसलिए हर दिन पानी देने से बचें। पहले मिट्टी को हाथ से छूकर देखें। अगर मिट्टी सूखी लगे तभी पानी दें। ध्यान रहे कि पानी केवल जड़ों तक जाए और गमले में पानी जमा न रहे। ज्यादा पानी से जड़ें सड़ सकती हैं और पत्ते पीले पड़ने लगते हैं।

नंबर 3- मिट्टी को ठंड से ढककर रखें

तेज ठंड में मिट्टी जल्दी ठंडी हो जाती है, जिससे पौधा कमजोर हो सकता है। आप गमले की मिट्टी के ऊपर सूखे पत्ते, भूसा या कार्डबोर्ड के छोटे टुकड़े डालकर उसे ढक सकते हैं। इससे मिट्टी का तापमान संतुलित रहता है और तुलसी को गर्मी मिलती रहती है।

नंबर 4- शाम के समय पौधे को ढकें

दिन में तो हल्की धूप तुलसी को मिल जाती है लेकिन रात में तापमान काफी गिर जाता है। इसलिए शाम होते ही तुलसी के गमले को हल्के कपड़े, प्लास्टिक शीट या किसी कवर से ढक दें। अगर ठंड ज्यादा हो तो गमला अंदर कमरे में रख सकते हैं। इस छोटे से कदम से पौधा सुरक्षित रहता है और सूखने का खतरा कम हो जाता है।

नंबर 5- सुबह की धूप सबसे जरूरी

तुलसी को सुबह की हल्की धूप बहुत पसंद है। कोशिश करें कि पौधे को ऐसी जगह रखें जहां इसे सीधी सुबह की धूप मिले। इससे तुलसी की वृद्धि तेज होती है और पत्ते चमकदार और हरे बने रहते हैं।

शिवानी ने रजत पदक जीतकर कॉलेज का नाम किया रोशनः डॉ. ऋषिपाल

गजब हरियाणा/ब्यूरो

निसिंग। बाबू अनंत राम जनता कॉलेज कौल के प्राचार्य डॉ. ऋषिपाल ने अपनी गहरी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया कि महाविद्यालय की बी.एससी. स्पोर्ट्स द्वितीय वर्ष की छात्रा शिवानी ने 'खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स जो 23 से 28 नवंबर तक जयपुर में आयोजित हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अर्जित किया है।

डॉ. ऋषिपाल ने कहा कि शिवानी की यह उपलब्धि महाविद्यालय के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय खेलों को शिक्षा का अभिन्न अंग मानता है और विद्यार्थियों को खेल व अकादमिक दोनों क्षेत्रों में श्रेष्ठता के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता रहा है। खेल विद्यार्थियों में नेतृत्व, अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना जैसे गुणों का विकास करते हैं, जो जीवन में आगे बढ़ने के लिए अनिवार्य हैं।

प्राचार्य ने शिवानी की इस सफलता को उसकी कड़ी मेहनत, समर्पण और प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम बताते हुए छात्रा, शारीरिक शिक्षा विभाग एवं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि शिवानी आने वाले समय में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रदेश और संस्थान का गौरव बढ़ाएगी। महाविद्यालय प्रबंधन समिति के प्रधान चौधरी तेजवीर सिंह ने भी शिवानी को उसकी इस उत्कृष्ट उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि ऐसी प्रतिभाशाली छात्राएँ संस्थान की प्रतिष्ठा को ऊंचाइयों तक ले जाती हैं।

महापौर कुलभूषण गोयल ने किए कई कार्यों का शुभारंभ

सुदेश/गजब हरियाणा

पंचकूला। पंचकूला के महापौर कुलभूषण गोयल ने पिछले दिनों सेक्टर 26 और सेक्टर 7 में करोड़ों रुपये के विकास कार्यों का शुभारंभ किया। महापौर ने सेक्टर 26 स्थित आशियाना ब्लाक-बी में फुटपाथ एवं सड़क निर्माण, बाउंड्री वॉल मरम्मत तथा नए विकास कार्यों का उद्घाटन किया। इन कार्यों पर लगभग 48 लाख रुपये की लागत आएगी। कार्यक्रम के दौरान संबंधित विभागों के अधिकारी, वार्ड पार्षद और स्थानीय निवासी मौजूद रहे। इसके बाद महापौर कुलभूषण गोयल ने सेक्टर 7 में ईपीडीएम ट्रैक, पार्क नवीनीकरण, ओपन जिम की स्थापना, बेंचों की व्यवस्था और मकान नंबर 380 के पास बाहरी टाइल कार्य का भी शुभारंभ किया। इस अवसर पर पार्षद ऋतु गोयल, ओमवती पूनिया, मंडल अध्यक्ष प्रमोद वत्स, वरिष्ठ भाजपा नेता सी.बी. गोयल, सुखवीर पूनिया, अधिकारी और स्थानीय निवासी उपस्थित रहे। महापौर कुलभूषण गोयल ने कहा कि पंचकूला में इन दिनों विकास की झड़ी लगी हुई है, और शहर के प्रत्येक सेक्टर में बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए तेज गति से कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि नगर निगम का लक्ष्य है कि पार्क, सड़कें, फुटपाथ, जल निकासी और आवासीय सुविधाओं को बेहतर बनाकर पंचकूला को माडल सिटी के रूप में विकसित किया जाए। स्थानीय निवासियों ने इन विकास कार्यों की शुरुआत पर महापौर का आभार व्यक्त

अमृतबाणी

शिरोमणि सतगुरु रविदास जिओ की

"रविदास कहे जा के हृदय रहे गुरु का नाम, सोई भक्त भगवंत संग व्यापे क्रोध ना काम"

जय गुरुदेव जी

व्याख्या : शिरोमणि सतगुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि जिस व्यक्ति के हृदय में गुरु का नाम वास करता है, वही ईश्वर का सच्चा भक्त है और उस पर क्रोध या काम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

धन गुरुदेव जी

हरियाणा सरकार का नया अध्यादेश, अब गांव की जमीन होगी आपके नाम

सुदेश/गजब हरियाणा

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने 'हरियाणा आबादी देह (स्वामित्व अधिकारों का निहितिकरण, अभिलेखन एवं समाधान) अध्यादेश, 2025' के जरिए गांवों के आबादी देह क्षेत्रों में कब्जाधारकों को कानूनी जमीन मालिक बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। तीन नवंबर को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में प्रस्ताव को मंजूरी मिली, जिसके बाद अधिसूचना जारी कर इसे लागू कर दिया गया। इस अध्यादेश के तहत अब तक कागजों में 'किसी के नाम दर्ज न होने वाली' आबादी देह भूमि पर वर्षों से रह रहे और निर्माण कर चुके परिवारों के वास्तविक स्वामित्व की पहचान, दस्तावेजीकरण और समाधान को कानूनी रूप दिया जाएगा। उद्देश्य है कि जिन्हें जमीन पर वास्तविक कब्जा और उपयोग का अधिकार है, उन्हें ही विधिवत मालिकाना हक दिया जाए।

प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना के तहत गांवों की आबादी देह का ड्रोन सर्वे कराया जाएगा, जिसमें हर सर्वे इकाई की सीमाएं, क्षेत्रफल और मौजूदा निर्माणों का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार होगा। यह रिकॉर्ड सरकारी अभिलेखों में 'प्रमाणिक सत्य' माना जाएगा और इसी आधार पर जिस व्यक्ति का स्वामित्व स्पष्ट होगा, उसे प्रॉपर्टी कार्ड जारी कर आधिकारिक मालिक घोषित किया जाएगा। ड्रोन सर्वे, भू-मानचित्र और राजस्व अभिलेखों के आधार पर तैयार प्रॉपर्टी कार्ड जमीन का वैधानिक स्वामित्व प्रमाण-पत्र होगा, जिसे आगे खरीद-फरोख्त, विरासत, बंधक, लीज आदि लेन-देन में इस्तेमाल किया जा सकेगा। गांव स्तर पर समितियाँ और राजस्व अधिकारी मिलकर आपत्तियों का निपटारा करते हुए अंतिम रिकार्ड ऑफ राइट्स तैयार करेंगे, जिससे भविष्य के विवादों पर भी रोक लग सकेगी। कानूनी मालिकाना हक मिलने से सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि ग्रामीण पहली बार अपनी आबादी देह संपत्ति के नाम पर बैंक से ऋण और अन्य वित्तीय सुविधाएं आसानी से ले सकेंगे। अब तक नामांतरण न होने और कागजी स्वामित्व न होने के कारण न तो वे संपत्ति का सही मूल्य प्राप्त कर पाते थे, न ही सरकारी योजनाओं और संस्थागत कर्ज तक उनकी सहज पहुंच बन पाती थी। सरकार का मानना है कि स्पष्ट रिकार्ड और स्वामित्व से गांवों में सुनियोजित विकास को गति मिलेगी, भूमि का मूल्य बढ़ेगा और आबादी देह क्षेत्र को शहरी मानकों के अनुरूप बुनियादी सुविधाओं से जोड़ा जा सकेगा। वर्षों से लंबित सीमांकन, रास्ते और मकान की दीवारों को लेकर चल रहे झगड़ों का समाधान होने से सामाजिक तनाव भी कम होगा और निवेश, निर्माण व पुनर्विकास के रास्ते खुलेंगे। अब तक आबादी देह या लाल डोरा क्षेत्र की भूमि प्रायः किसी एक व्यक्ति के नाम राजस्व रिकार्ड में दर्ज नहीं होती थी, जिससे रजिस्ट्री, नामांतरण, नक्शा पास करवाने और सरकारी दस्तावेज तैयार करवाने में भारी दिक्कत आती थी। कई पीढ़ियों से रह रहे परिवारों के पास केवल पारंपरिक मान्यता या पंचायती स्तर के कागज होते थे, जो अदालत या बैंक के सामने पूर्ण कानूनी प्रमाण के रूप में स्वीकार्य नहीं थे। अब ड्रोन मैपिंग, डिजिटल रिकार्ड और प्रॉपर्टी कार्ड के जरिए इन्हीं कब्जाधारकों को वैध स्वामी मानकर उनके हक को अधिसूचित किया जाएगा और आगे किसी भी तरह के विवाद के लिए इसी रिकॉर्ड को अंतिम माना जाएगा। यह कदम न केवल स्वामित्व स्पष्ट करेगा, बल्कि ग्रामीण भू-अभिलेखों के आधुनिकीकरण और पारदर्शिता की दिशा में भी हरियाणा को नए मॉडल के रूप में स्थापित करेगा।

मन की बातें पढ़ने का रहस्य

साधु की इच्छा और बुद्ध का सवाल

बहुत समय पहले मगध राज्य में एक साधु रहते थे। उनका एक ही सपना था– 'मैं मन की बातें पढ़ सकूँ। '

वो सोचते थे– अगर मैं मन पढ़ लूँ, तो मैं जान जाऊँगा कौन मेरा मित्र है, कौन शत्रु। अगर मैं मन पढ़ सकूँ, तो दुनिया मुझे सम्मान देगी। अगर मैं मन पढ़ लूँ, तो मैं दूसरों को नियंत्रित कर पाऊँगा। ये सोच उनके भीतर इतनी गहरी हो गई कि वो ध्यान तो करते, लेकिन ध्यान का उद्देश्य शांति नहीं था, बल्कि शक्ति पाना था।

साधु की यात्रा बुद्ध के पास

एक दिन उन्होंने सुना कि गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ श्रावस्ती में ठहरे हुए हैं। बुद्ध के बारे में वो पहले भी सुन चुके थे–लोग कहते थे, 'बुद्ध तो मन की गहराई तक देख लेते हैं। वो बिना पूछे भी इंसान के दुख को समझ जाते हैं।

साधु का मन खिल उठा—

'यही तो मैं चाहता हूँ! अगर बुद्ध के पास यह शक्ति है, तो मुझे भी यह मिल सकती है। '

वो बिना देर किए बुद्ध के पास पहुँच गए।

मुलाक़ात

साधु ने प्रणाम किया और कहा:- 'भगवान! मुझे एक वरदान चाहिए। मुझे मन की बातें पढ़ने की शक्ति दीजिए। मैं जानना चाहता हूँ कि लोग क्या सोचते हैं। '

बुद्ध ने साधु को देखा। उनकी आँखों में गहरी करुणा थी।

उन्होंने शांत स्वर में कहा: - 'तुम मन की बातें क्यों पढ़ना चाहते हो? '

साधु थोड़े चौंके।

उन्होंने जवाब दिया: 'भगवान! अगर मैं मन पढ़ लूँ तो मुझे कोई धोखा नहीं देगा। मुझे सम्मान मिलेगा। लोग मुझसे डरेंगे और मैं हमेशा सुरक्षित रहूँगा। 'बुद्ध हल्के से मुस्कुराए। 'तो तुम शक्ति चाहते हो... सुरक्षा के लिए? ' साधु बोला: 'हाँ, यही तो मेरी साधना का लक्ष्य है। '

बुद्ध का पहला प्रश्न

बुद्ध ने धीरे से पूछा:- 'साधु! मान लो तुम किसी का मन पढ़ सकते हो। अगर तुम देखो कि कोई व्यक्ति तुम्हारे बारे में बुरा सोच रहा है–तुम्हें गाली दे रहा है, तुम्हारे लिए ईर्ष्या रखता है... तो क्या तुम खुश रहोगे या दुखी? '

साधु एकदम चुप हो गया।

उसने सोचा–अगर सच में ऐसा हुआ, तो शायद उसे गुस्सा आएगा, दुख होगा।

बुद्ध ने आगे कहा:- 'और मान लो किसी का मन तुम पढ़ो और पता चले कि वह सिर्फ़ अपने स्वार्थ के लिए तुम्हारे पास है, वह भीतर से तुम्हारा मित्र नहीं... तो क्या तुम्हारा विश्वास टूटेगा या नहीं? '

साधु और भी असमंजस में पड़ गया।

सत्य का दर्पण

बुद्ध ने कहा:- 'साधु! मन पढ़ना कोई वरदान नहीं है, यह तो एक बोझ है। क्योंकि जब तुम जान जाओगे कि हर व्यक्ति के मन में क्या चल रहा है, तो तुम्हें दुनिया से घृणा होने लगेगी। मनुष्य के मन में कितना लोभ, क्रोध, ईर्ष्या और मोह भरा है–अगर तुम यह सब देख लोगे, तो तुम्हारा हृदय कभी शांत नहीं रहेगा। 'साधु स्तब्ध रह गया। उसने कभी इस दृष्टिकोण से नहीं सोचा था।

बुद्ध का दूसरा प्रश्न

बुद्ध ने फिर पूछा:- 'तुम शक्ति चाहते हो। लेकिन क्या शक्ति से करुणा आती है?

क्या शक्ति से प्रेम आता है?

क्या शक्ति से दुख मिटते हैं? '

साधु ने सिर झुका लिया।

वो समझ रहा था कि शक्ति पाना आसान है, पर उसका बोझ ढोना कठिन है।

बुद्ध का रहस्योद्घाटन

बुद्ध ने कहा:- 'साधु! अगर सच में तुम मन की बातें पढ़ना चाहते हो, तो यह जादू से नहीं होगा। यह तब होगा जब तुम अपने मन को शांत करोगे। जब तुम्हारा मन निर्मल होगा, तो तुम बिना पूछे ही समझ जाओगे कि सामने वाला दुखी है या प्रसन्न। तुम्हें शब्दों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि करुणा का हृदय मन की गहराइयों को महसूस कर लेता है। यही असली 'मन पढ़ने की कला' है। '

साधु का परिवर्तन

साधु की आँखों से आँसू निकल आए।

उसने कहा:- 'भगवान! आज तक मैं शक्ति की तलाश में था। लेकिन अब समझ गया कि शक्ति से बड़ी करुणा है। मैं आपके चरणों में शरण लेता हूँ। '

बुद्ध ने आशीर्वाद दिया और कहा:- 'मन की बातें जाननी हों तो सबसे पहले अपने मन को जानो। जब तुम्हें अपने भीतर का सच दिखेगा, तभी तुम दूसरों के मन को समझ सकोगे। '

करुणा से मन को पढ़ने की कला

साधु बुद्ध के चरणों में बैठ चुका था। उसका अहंकार धीरे-धीरे टूट चुका था। लेकिन बुद्ध जानते थे–मन से वर्षों की गहराई में बैठी इच्छाएँ इतनी जल्दी खत्म नहीं होतीं। इसलिए उन्होंने उसे और उनके शिष्यों को एक कथा सुनाई।

बुद्ध की कथा - बीज और मिट्टी

बुद्ध बोले:- 'सुनो साधु, और तुम सब भी शिष्यगण, मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ। मान लो तुम्हारे पास एक बीज है। तुम उसे ज़मीन पर फेंकते हो।

-अगर ज़मीन पत्थरीली है, तो बीज कभी अंकुरित नहीं होगा।

-अगर ज़मीन उपजाऊ है, तो बीज पेड़ बन जाएगा।

इसी तरह, जब तुम किसी से मिलते हो, तो उनके शब्द बीज हैं। लेकिन तुम किस मन में उन्हें ग्रहण करते हो, यह तुम्हारे अंदर की मिट्टी पर निर्भर करता है।

अगर तुम्हारा मन क्रोध से भरा है, तो तुम हर शब्द को अपमान समझोगे। अगर तुम्हारा मन करुणा से भरा है, तो तुम वही शब्द समझोगे कि सामने वाला दुखी है और मदद चाहता है। ' साधु ध्यान से सुन रहा था।

मन पढ़ने की पहली कुंजी - धैर्य

बुद्ध ने आगे कहा:- 'मन पढ़ने का पहला रहस्य है धैर्य। बहुत बार लोग तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं।

-कोई गाली दे तो तुरंत गुस्सा।

-कोई बुरा बोले तो तुरंत दुख।

-कोई प्रशंसा करे तो तुरंत गर्व।

लेकिन जो साधक धैर्य रखता है, वह तुरंत प्रतिक्रिया नहीं देता। वह चुप रहता है, सुनता है, और समझने की कोशिश करता है। यही धैर्य धीरे-धीरे उसे यह जानने में सक्षम बनाता है कि सामने वाला असल में क्या कहना चाहता है, क्या महसूस कर रहा है। '

घटना - रोता हुआ किसान

इतने में पास के गाँव का एक किसान बुद्ध से मिलने आया। उसका चेहरा उदास था और आँखों से आँसू बह रहे थे।

उसने कहा:- 'भगवान! मेरा जीवन बर्बाद हो गया है। मैंने खेत में फसल बोई थी। बारिश न आई, तो सब सूख गया। घर में खाने को कुछ नहीं है। मेरे बच्चे भूखे हैं। मैं क्या करूँ? 'वो जोर-जोर से रोने लगा।

साधु के मन में पहला विचार आया–

'ये तो बहुत नकारात्मक व्यक्ति है। ये सिर्फ़ दुख की बातें करता है। ' लेकिन बुद्ध चुपचाप किसान को देखते रहे। उनकी आँखों में करुणा थी।

उन्होंने कहा:- 'भाई, तुम्हारे शब्दों में दुख है। लेकिन मैं तुम्हारे आँसुओं के पीछे प्रेम भी देखता हूँ। तुम रो रहे हो, क्योंकि तुम अपने बच्चों से प्रेम करते हो। तुम परेशान हो, क्योंकि तुम्हारे परिवार के प्रति तुम्हारी ज़िम्मेदारी गहरी है। दुख के पीछे प्रेम छिपा है। और प्रेम ही सबसे बड़ी शक्ति है। 'किसान ने सिर उठाया। उसके आँसू अब हल्के हो चुके थे। उसने पहली बार किसी ने उसके भीतर की सच्चाई को समझा। **वह बोला:-** 'भगवान! आपने सही कहा। मैं सच में अपने बच्चों के लिए रो रहा था। कोई यह बात समझ नहीं पाया। '

साधु की हैरानी

साधु यह देखकर चौंक गया। उसे लगा– 'मैंने तो इस आदमी को नकारात्मक समझा। पर बुद्ध ने उसके शब्दों के पीछे छिपे भाव को पढ़ लिया। यही तो मन पढ़ना है! '

मन पढ़ने की दूसरी कुंजी - करुणा

बुद्ध बोले:- 'मन पढ़ने का दूसरा रहस्य है करुणा। जब तुम किसी के शब्द सुनो, तो सिर्फ़ शब्द मत देखो। उसके पीछे का दर्द देखो। उसके भीतर का प्रेम देखो। अगर तुम्हारे भीतर करुणा है, तो तुम बिना जादू के भी लोगों का मन पढ़ लोगे। क्योंकि करुणा हृदय को साफ़ कर देती है, और साफ़ हृदय दूसरों की भावनाएँ पकड़ लेता है। '

उदाहरण - क्रोधित व्यापारी

बुद्ध ने एक और कथा सुनाई। 'एक बार एक व्यापारी मेरे पास आया। वह बहुत गुस्से में था। उसने मुझे कठोर शब्द कहे–'तुम लोग समाज को बिगाड़ रहे हो! लोग काम छोड़कर तुम्हारे पीछे घूमते हैं!' मेरे शिष्यों को गुस्सा आया। पर मैंने शांत होकर उससे पूछा– 'भाई, तुम इतने क्रोधित क्यों हो?' वह चुप हो गया। फिर उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। उसने कहा– 'भगवान, मेरे बेटे ने सब कुछ छोड़ दिया है और आपके साथ भिक्षु बन गया है। मैं अकेला पड़ गया हूँ। मेरा गुस्सा आप पर नहीं है, मेरे अकेलेपन पर है।'तुम देखो–अगर मैं उसके गुस्से को ही सच मान लेता, तो कभी उसकी पीड़ा को न समझ पाता। लेकिन करुणा से मैंने उसका असली मन पढ़ लिया। 'साधु की आँखें खुली, साधु अब समझ चुका था। उसने सोचा– 'सच में, मैं तो केवल शक्ति चाहता था। लेकिन बुद्ध की शिक्षा दिखाती है कि असली शक्ति करुणा है। अगर करुणा हो, तो बिना शब्दों के भी सामने वाले की आत्मा को समझ सकते हैं। '

अपने ही मन को जानो

बुद्ध के उपदेश सुनकर साधु अब बहुत बदल चुका था। उसने समझ लिया था कि असली 'मन पढ़ना' कोई जादुई शक्ति नहीं है, बल्कि धैर्य और करुणा से पैदा होने वाली संवेदनशीलता है।

लेकिन फिर भी उसके मन में एक सवाल बाकी था।

उसने बुद्ध से पूछा: 'भगवान! आपने कहा कि धैर्य और करुणा से हम दूसरों के मन को समझ सकते हैं। पर क्या यह पर्याप्त है? क्या कोई व्यक्ति सच में पूरी तरह किसी और का मन जान सकता है? 'बुद्ध मुस्कुराए।

उन्होंने कहा:- 'साधु, दूसरों का मन जानने से पहले तुम्हें अपने मन को जानना होगा। जब तक तुम अपने भीतर की गहराई को नहीं समझते, तब तक तुम दूसरों की गहराई को भी नहीं समझ सकते। '

अपने मन की उलझनें

बुद्ध ने शिष्यों को पास बैठाया और बोले:

'मन एक झील की तरह है।

ज़अगर झील का पानी गंदा है, तो उसमें चाँद का प्रतिबिंब भी धुंधला दिखाई देता है।

ज़अगर झील शांत और निर्मल है, तो वही चाँद साफ-साफ दिखाई देता है।

तुम्हारा मन अगर क्रोध, लोभ, ईर्ष्या और भय से भरा है, तो तुम सामने वाले को साफ़ नहीं देख पाओगे।

लेकिन अगर तुम्हारा मन शांत और निर्मल है, तो तुम न केवल खुद को, बल्कि सामने वाले को भी स्पष्ट समझ लोगे। '

घटना - आनंद का प्रश्न

इसी समय बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने पूछा:

'भगवान! आपने कहा कि हमें अपने मन को देखना चाहिए। लेकिन मन तो लगातार दौड़ता है–कभी अतीत में, कभी भविष्य में। उसे कैसे समझा जाए? '

बुद्ध ने उत्तर दिया:

'आनंद, मन को पकड़ने की कोशिश मत करो। उसे देखो, जैसे कोई बादल आसमान में आता-जाता है।

-जब तुम क्रोधित हो, तो सिर्फ़ देखो–'यह क्रोध है।'

ज़जब तुम दुखी हो, तो देखो–'यह दुख है।'

जब तुम प्रसन्न हो, तो देखो–'यह प्रसन्नता है।'

जैसे ही तुम देखना सीख जाओगे, तुम अपने मन को समझने लगोगे। और जब तुम अपने मन को समझ लोगे, तभी तुम दूसरों के मन को सच में जान सकोगे। '

-बाकी अगले अंक में .....

दर्शन की घड़ी

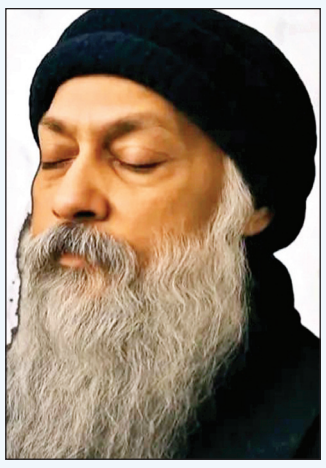

अलबर्ट आइंस्टीन इस सदी के सर्वाधिक बड़े विचारकों में एक थे। लेकिन मरते वक्त उन्होंने जो कहा ,

वह उनके जीवन भर की पीड़ा का निचोड़ था ।

किसी ने पूछा , आइंस्टीन जब सांस तोड़ रहे थे , कि अगर पूरब के लोग सच हों और पुनर्जन्म होता हो तो आप आगे भी वैज्ञानिक ही होना चाहेंगे या कुछ और ?

मनुष्य के आखिरी वचन बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं ।

वे उसके सारे जीवन का निचोड़ होते हैं

क्योंकि उसके बाद फिर उनमें सुधार करने की भी कोई सुविधा न रहेगी ।

आइंस्टीन ने आंखें खोली और कहा कि फिजिसिस्ट होने की बजाय मैं एक प्लम्बर होना पसंद करूंगा ताकि कुछ समय अपने संबंध में सोचने के लिए भी तो दे सकूं ।

मेरा सारा समय चांद-तारों के संबंध में सोचने में खो गया

और मैं वैसा ही अज्ञानी मर रहा हूं जैसा अज्ञानी पैदा हुआ था और दुनिया मुझे ज्ञानी कहती है।

अगर कोई आगे मेरा जन्म हो तो मैं वैसा ही नहीं मरना चाहता हूं जैसा पैदा हुआ ।।

मैं जागकर , अपने को जीतकर , अपने को पहचानकर इस जगत से विदा होना चाहता हूं। यह जीवन तो गया । यह तो बह गया।

अब इसमें तो कोई संभावना न बची ।

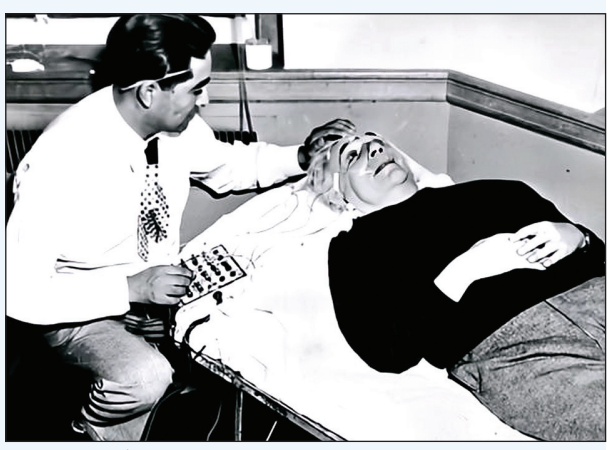

जिस चिन्तन और मनन के लिए मैंने तुमसे कहा है

उसमें पहली बात है कि सब तरफ से अपने विचारों को

खींचकर अपने पर ही आमंत्रित कर लेना ।

और एक जादू घटित होता है जिसकी तुम कल्पना भी नहीं

कर सकते। तुम सोच सकते हो केवल उसी चीज के संबंध में जिसके संबंध में तुमने पढ़ा हो , सुना हो , किसी ने कुछ कहा हो। तुम अपने संबंध में क्या सोचोगे ?

तो जैसे ही व्यक्ति सारे बाह्य चिन्तन छोड़ देता है और उसकी आंखें सिर्फ अपने ही रूप पर टिक जाती हैं ...

इसलिए मैंने कहा , एक जादू घटित होता है :

तुम अपने संबंध में सोच नहीं सकते ।

वहां सोचना शून्य हो जाता है।

वहां सिर्फ देखना शेष रह जाता है । इसलिए हमने इस देश में उस घड़ी को दर्शन की घड़ी कहा है ,चिन्तन की नहीं।

-ओशो

भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर महापरिनिर्वाण दिवस विशेष (6 दिसंबर)

महापरिनिर्वाण दिवस हर वर्ष 6 दिसंबर को मनाया जाता है, जो भारतीय संविधान के शिल्पकार ,भारत रत्न डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की पुण्यतिथि है। यह दिन डॉ. अंबेडकर के सामाजिक न्याय, समानता, और जाति-भेदभाव के खिलाफ उनके संघर्ष को याद करने और सम्मानित करने का अवसर है। डॉ. अंबेडकर, जिन्हें आधुनिक भारत के निर्माता और भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता के रूप में जाना जाता है, का 6 दिसंबर 1956 को निधन हुआ था। महापरिनिर्वाण शब्द बौद्ध दर्शन से लिया गया है, जिसका अर्थ जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति होता है, और यह दिन भारतीय समाज में एक पवित्र और सम्मानित दिवस माना जाता है। डॉ. अंबेडकर ने अस्पृश्यों, हाशिए पर पड़े समुदायों, महिलाओं और मजदूरों के अधिकारों के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने 1927 के महाड़ सत्याग्रह जैसे आंदोलन किए, जिनके माध्यम से अछूतों को सार्वजनिक जलस्रोतों से पानी लेने का अधिकार दिलाया गया। वे कोलंबिया और लंदन विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट प्राप्त थे और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 को संविधान की आत्मा माना करते थे। इस दिन देशभर में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्प अर्पण, और उनकी शिक्षाओं को याद करना शामिल होता है। विशेष रूप से महाराष्ट्र में, मुंबई के चैत्यभूमि में लाखों लोग उनकी समाधि स्थल पर इकट्ठा होकर श्रद्धांजलि देते हैं। यह दिन सार्वजनिक अवकाश के रूप में घोषित है और सामाजिक न्याय के लिए उनके अपरंपार योगदान के लिए इन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है। डॉ. अंबेडकर को 1990 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उनका संदेश न केवल उनके निधन की याद दिलाता है, बल्कि भारत की सामाजिक न्याय और समानता की लड़ाई में प्रेरणा का स्रोत भी बना हुआ है। महापरिनिर्वाण दिवस भारतीय संविधान और सामाजिक समरसता के आदर्शों को पुनः जीवंत करने का अवसर प्रदान करता है, जो आज भी सामाजिक सुधार और समानता के लिए दिशा दिखाता है।

शहीद मातादीन की स्मृति में टोहाना में रक्तदान शिविर, रक्तदाताओं ने रक्तदान कर अर्पित की श्रद्धांजलि

गजब हरियाणा/ब्यूरो

टोहाना। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी प्रज्वलित करने वाले महान क्रांतिकारी अमर शहीद मातादीन की स्मृति में इस वर्ष भी टोहाना में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर शनिवार को जगदम्बे ब्लड बैंक, टोहाना में संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में रक्तदाताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपने रक्तदान द्वारा शहीद की स्मृति को नमन किया।कार्यक्रम की अध्यक्षता वैद्य कर्मवीर लांबा ने की। उन्होंने कहा कि शहीद हमारी अमूल्य धरोहर हैं और उनके बलिदान को याद रखना हमारा कर्तव्य है। बेगमपुरा चैरिटेबल ट्रस्ट से डॉ. कर्मवीर दहिया और बाबा प्रीत रविदासिया ने कहा कि आज हम जिन अधिकारों और स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं, उनकी नींव शहीद मातादीन जैसे वीरों के बलिदान पर रखी गई है।

मुख्य वक्ता साहित्यकार डॉ. नवल सिंह ने कहा कि शहीद मातादीन ने अंग्रेजों की कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी के सच को उजागर कर 1857 की क्रांति की पहली चिंगारी भड़काई थी। उनके इस साहसिक कदम से अंग्रेजों की साज़िश बेनकाब हुई और मेरठ से उठी विद्रोह की लपट पूरे देश में फैल गई। अंग्रेजों ने उनके खिलाफ 'British Government vs Matadin' के नाम से मुकदमा चलाया और अमानवीय यातनाएँ दीं। मातृभूमि के प्रति सर्वोच्च समर्पण के चलते वे 8 अप्रैल 1857 को शहीद हो गए।रिफेक्ट हाउस की ओर से दीपक अरोड़ा ने कार्यक्रम में पहुंचे अतिथियों और रक्तदाताओं का धन्यवाद किया।

शिविर के दौरान वरिष्ठ और युवा रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। प्रमुख रक्तदाताओं में संजीव कुमार गोयल (50वीं बार), कुलदीप सेनी (41वीं बार), प्रदीप बराड़ (41वीं बार), संजय मुवाल (3वीं बार), बाबा प्रीत रविदासिया (21वीं बार), सुनील राठी (7वीं बार), सोनू चौहान (16वीं बार), नवल सिंह (77वीं बार), मंजीत सिंह (4वीं बार), कुलदीप सिंह, चन्द्रकला (3वीं बार), दीपक व रोहित (पहली बार) सहित कई अन्य रक्तदाताओं ने भी योगदान दिया और शहीद मातादीन को श्रद्धासुमन अर्पित किए।शिविर के समापन पर सभी रक्तदाताओं को स्मृति-पत्र और पौधे भेंट कर सम्मानित किया गया। यह आयोजन जय हिन्द परिवार, बेगमपुरा चैरिटेबल ट्रस्ट और समस्त टोहानवी समाज के सहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

टंट्या भीलः आदिवासी क्रान्तिकारी और भारतीय रॉबिनहुड (बलिदान दिवस) विशेष)

गजब हरियाणा ब्यूरो

टंट्या भील का जन्म सन् 1842 में मध्य प्रदेश के खंडवा जिले की पंधाना तहसील के बड़दा गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम भाऊसिंह था, जिन्होंने उन्हें बचपन से ही तीर-कमान, लाठी और गोफल चलाना सिखाया था। टंट्या का नाम झगड़ा या संघर्ष के लिए रखा गया था क्योंकि वे आदिवासी समाज पर अंग्रेजों और जमींदारों के अत्याचार के खिलाफ निरंतर संघर्ष करते थे। जवान होते ही उन्होंने अंग्रेजों और जमींदारी प्रथा के खिलाफ सक्रिय विद्रोह शुरू कर दिया था। विद्रोही जीवन और क्रांतिकारी कार्य 1870 से लेकर 1880 के दशक में टंट्या भील ने मध्य प्रांत और बंबई प्रेसीडेंसी के लगभग 1700 गांवों में अंग्रेजों के खिलाफ समानांतर सरकार चला कर बड़े पैमाने पर प्रतिरोध किया। उन्हें आदिवासियों का भगवान माना जाता था क्योंकि उनके राज में कोई भूखा नहीं सोता था। टंट्या ने अमीरों से लूट कर गरीबों में बांटने का काम किया, इसी वजह से उन्हें 'भारतीय रॉबिनहुड' कहा गया। महान क्रांतिकारी तात्या टोपे ने टंट्या को छापामार युद्धकला सिखाई थी, जिससे टंट्या ने अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी।

गिरफ्तारी, सजा और बलिदान

अंग्रेजों ने टंट्या को पकड़ने के लिए विशेष दस्ते तक भारत में भेजे। 11 अगस्त 1889 को रक्षाबंधन के दिन, उनकी बहन के पति गणपत सिंह की मुखबिरी पर टंट्या को धोखे से गिरफ्तार कर लिया गया। जबलपुर में सत्र न्यायालय ने 19 अक्टूबर 1889 को उन्हें फांसी की सजा सुनाई, और 4 दिसंबर 1889 को जबलपुर की सेंट्रल जेल में उन्हें फांसी दे दी गई। जेल में भी उन्होंने अंग्रेजों के सामने झुकने से इंकार किया और अपनी वीरता का परिचय दिया। उनका जीवन और बलिदान आज भी आदिवासियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। टंट्या भील ने केवल अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि आदिवासी समाज के लिए सम्मान और अधिकारों की रक्षा की। वे गरीबों के मसीहा और अमीरों के लुटेरे थे। उनके नेतृत्व में आदिवासी क्षेत्रों में एक सामाजिक क्रांति का आगाज हुआ। उनकी याद में आज भी मध्य प्रदेश के कई इलाकों में सम्मान समारोह और यात्राएं का आयोजन होता है। टंट्या भील का संघर्ष भारत की स्वतंत्रता संग्राम की कहानियों में एक अनूठा अध्याय है। इस प्रकार, टंट्या भील का जीवन और उनका संघर्ष भारतीय इतिहास में एक अमर गाथा के रूप में जीवित है, जो अन्याय के खिलाफ लड़ते हुए स्वराज्य और सम्मान की छवि प्रस्तुत करता है।

विश्व पटल पर अपनी अनोखी छाप छोड़ रहा है अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव

शिल्पकारों की शिल्पकला और कलाकारों की सांस्कृतिक कला ने बदला ब्रह्मसरोवर की फिजा का रंग, महोत्सव के हर लम्हें को कैमरों में कैद करते नजर आ रहे है पर्यटक, हरियाणा के साथ-साथ दूसरे प्रदेशों की सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने का एक बड़ा मंच है अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

डॉ.जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर 15 नवंबर से 5 दिसंबर 2025 तक चलने वाले अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव ने विश्व पटल पर अपनी एक अनोखी छाप छोडऩे का काम किया है। इतना ही नहीं इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव की गूंज देश प्रदेश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सुनाई दे रही है। अहम पहलू यह है कि इस महोत्सव के 15 वें दिन भी पर्यटक महोत्सव को निहार रहे है।

ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर शनिवार को इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में शिल्पकारों की अनोखी शिल्प कला को देखकर पर्यटक मंत्रमुग्ध हो रहे है, विभिन्न राज्यों से आए शिल्पकारों ने अपनी शिल्पकला का अनोखा प्रदर्शन कर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने का काम कर रहे है और पर्यटक इन शिल्पकारों की शिल्पकला से बनी वस्तुओं की जमकर खरीददारी भी कर रहे है। इन शिल्पकारों की शिल्पकला ने ब्रह्मसरोवर की फिजा का रंग बदलने का काम किया है।

उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि प्रदेश सरकार और प्रशासन के तत्वाधान में आयोजित ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर चल रहे अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव 2025 के 15वें दिन विभिन्न राज्यों से आए लोक कलाकारों ने अपने-अपने प्रदेश की सांस्कृतिक लोक कला से पर्यटकों को झूमने पर मजबूर किया है। इतना ही नहीं ढोल की धाप और बीन के लहरे पर पर्यटक भाव विभोर होकर घूमते नजर आ रहे है। महोत्सव में आने वाला हर एक पर्यटक इस महोत्सव की जमकर प्रशंसा कर रहा है। विभिन्न राज्यों से आए हुए लोक कलाकारों ने अपने-अपने प्रदेश की लोक संस्कृति को उजागर करने का काम किया है। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव विलुप्त हो चुकी सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने का एक बड़ा मंच साबित हो रहा है। इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में आने वाले हर कोई पर्यटक इन लम्हों को अपने-अपने कैमरों में कैद करते हुए नजर आ रहे है।

बघेली, भीली, कोरकू और मालवी जैसे व्यजंन बढ़ा रहे हैं पर्यटकों का स्वाद

गजब हरियाणा/ ब्यूरो

कुरुक्षेत्र। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 में दूर दराज से आने वाले पर्यटकों को मध्य प्रदेश के बघेली, भीली, कोरकू और मालवी जैसे व्यजंन स्वाद बढ़ा रहें है। इस महोत्सव में पहली बार पर्यटकों को मध्य प्रदेश की परम्परागत डिश चखने को मिल रही हैं। इस वर्ष प्रदेश सरकार की तरफ से मध्य प्रदेश को अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 में पार्टनर राज्य के रूप में आमंत्रित किया है। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 में प्रदेश सरकार की तरफ से पार्टनर राज्य के रूप में मध्यप्रदेश को आमंत्रित किया गया था। इस प्रदेश ने ब्रह्मसरोवर पुरुषोत्तमपुरा बाग के साथ पैवेलियन की स्थापना की गई हैं।

इस पैवेलियन में मध्यप्रदेश के परम्परागत बघेली, भीली, कोरकू और मालवी जैसे व्यजंन रखे गए है। इन व्यंजनों का देश-विदेश से आने वाले पर्यटक स्वाद चख रहे है। इनमें से अधिकतर पर्यटक ऐसे है जिनमें पहली बार मध्यप्रदेश की डिश चखने को मिली हैं। मध्यप्रदेश से आए मंशाराम हरदा, मधू सूधन, संतोष द्विवेदी, अजय सिसोदिया का कहना है कि अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2025 में पहली बार कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर आए है। इस बार पर्यटकों के लिए मध्यप्रदेश के परंपरागत व्यंजन, लोक कलाएं जिनमें अहिराई, गुदुम बाजा जैसे लोक नृत्य प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके अलावा मध्य प्रदेश के ग्रामीण आंचल में छिपे इतिहास को भी पैवेलियन में दिखाने का प्रयास किया गया हैं। इन प्रयासों को स्थानीय पर्यटक खूब सराह रहे है। इस महोत्सव में आमंत्रित करने के लिए शिल्पकारों ने हरियाणा और मध्यप्रदेश सरकार का आभार

राजस्थानी लोक नृत्य सहरिया स्वांग ने महोत्सव में छोड़ी अपनी छाप

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। ब्रह्मसरोवर के तट पर राजस्थान के लोक कलाकारों द्वारा लोक नृत्य सहरिया स्वांग नृत्य अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में छाप छोड़ने का काम कर रहा है। ग्रुप लीडर के नेतृत्व में 15 सदस्यों की टीम सहरिया स्वांग नृत्य के द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। सहरिया स्वांग नृत्य में कलाकार तीन प्रकार के नृत्यों के द्वारा अपनी बेहतरीन कला का प्रदर्शन करते हैं, जिसमें भस्मासुर स्वांग, कालिका का स्वांग व होलिका स्वांग के द्वारा अलग-अलग मुद्राओं में अपनी कला की छाप दर्शकों के मन पर छोड़ रहे हैं। कलाकार ने बातचीत करते हुए कहा कि स्मासुर स्वांग में भगवान शिव और भस्मासुर की विधाओं को दर्शाया जाता है, इसी प्रकार कालिका स्वांग चेत्र मास में किया जाने वाला स्वांग है और इसी प्रकार होलिका स्वांग फागुन माह में किया जाने वाला नृत्य है। सहरिया स्वांग में कलाकार अपने शरीर को विभिन्न प्रकार के रंगों से रंगकर आदिवासी वेशभूषा में शेर, बन्दर, नाग इत्यादि का रूप बनाकर नृत्य करते हैं। कलाकारों ने बताया कि उन्हें यहां पर आकर अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका मिला है।

सैंड आफ आर्ट के माध्यम से पुरुषोत्तमपुरा बाग के मुख्य सांस्कृतिक मंच पर दिखाई महाभारत

कवि हरिओम पंवार और अन्य कवियों ने प्रस्तुत की कविताएं, कला एवं सांस्कृतिक विभाग के उपनिदेशक डा. पवन आर्य ने सांस्कृतिक संध्या का किया शुभारंभ

गजब हरियाणा/ब्यूरो

कुरुक्षेत्र। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में प्रसिद्ध कवि हरिओम पंवार और अन्य कवियों ने समाज को जागरूक करने के लिए व्यंगात्मक कविताओं की प्रस्तुति देकर ब्रह्मसरोवर में पहुंचने वाले पर्यटकों को जागरूक करने का काम किया। वहीं सैंड आफ आर्ट के कलाकारों ने अपनी बेहतरीन प्रस्तुति देकर महाभारत को जीवंत करने का अनोखा प्रयास किया।

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2025 में शनिवार को ब्रह्मसरोवर पुरुषोत्तमपुरा बाग में आयोजित सांस्कृतिक संध्या में डा. हरिओम पंवार, डा. गजेन्द्र सोलंकी, सीता राठौर, सुनील जोगी व अन्य कवियों ने वर्तमान समाज को जागरूक करने के लिए अपनी कविताओं की बेहतरीन प्रस्तुति दी। इन प्रस्तुतियों पर सभी ने खूब सराहा।

महोत्सव के मुख्य मंच पर पहली बार सैंड आफ आर्ट की प्रस्तुति हई। इस कलाकार ने रेत के माध्यम से कलाकृतियां बनाकर महाभारत के अहम लम्हों को जीवंत करने का अनोखा प्रयास किया। इस प्रस्तुति में भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच कुरुक्षेत्र की भूमि पर हजारों वर्ष पूर्व हुए उपदेशों को भी दिखाने का प्रयास किया गया। इस सांस्कृतिक संध्या का शुभारंभ कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के उप निदेशक डा.पवन आर्य, सांस्कृतिक अधिकारी डा. हृदय कौशल, डा. कुसम डांगी, डा. तान्या ने किया। इस सांस्कृतिक संध्या में केडीबी के सदस्यों ने कलाकारों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस मौके पर केडीबी सदस्य विजय नरुला, डा. एमके मोदगिल, कैप्टन अमरजीत सिंह, अशोक रोशा, डा. ऋषिपाल मथाना, मेला प्राधिकरण के सदस्य डा. अवनीत वडैच, सौरभ चौधरी, सैनी समाज सभा के प्रधान गुरनाम सैनी, हरमेश सिंह सैनी, सुशील राणा, डॉ. अलकेश मोदगिल, राजेश कुमार, डॉ. संदीप छबड़ा, रोशन बेदी, डा. सुशील टाया सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

गीता जयंती महोत्सवः हरियाणा पैवेलियन बना संस्कृति और कला का अद्भुत संगम

हरियाणवी कलाकार नवीन पुनिया की प्रस्तुतियों से पर्यटक हुए मंत्रमुग्ध

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 में हरियाणा पैवेलियन कला, संस्कृति और परंपरा का एक जीवंत केंद्र बन गया है। यह पैवेलियन संस्कृति एवं कला का एक अद्भुत संगम प्रस्तुत कर रहा है, जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। जहां एक ओर पैवेलियन में हरियाणवी संस्कृति की एक मनमोहक झलक देखने को मिलती है वहीं दूसरी ओर पैवेलियन में दिनभर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

हरियाणा के प्रतिभाशाली कलाकार अपनी लोक कला, संगीत और नृत्य की प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं। इन्हीं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज हरियाणा के बहुमुखी और प्रतिष्ठित कलाकार नवीन पूनिया ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अपनी हरियाणवी संस्कृति को जीवंत करती इस प्रस्तुति ने पैवेलियन में आए पर्यटकों को हरियाणा की समृद्ध कला और परंपरा से रूबरू कराया। नवीन पूनिया हरियाणा के एक जाने-माने कलाकार हैं, जिन्होंने गायन और स्टेज को के साथ-साथ कई अन्य क्षेत्रों में भी अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। वे एक ऐसे प्रेरणादायक व्यक्तित्व के हैं जिन्होंने खेल, सेना और कला में उत्कृष्टता हासिल की है। उन्होंने हरियाणवी संगीत उद्योग में अपनी एक मजबूत जगह बनाई है। उनके लोकप्रिय गीतों में बालू रेत, काला डोरा, सोतन, ठिकाने, और झूठे वादे इत्यादि शामिल हैं, जिनकी बड़ी फैन फॉलोइंग है। बता दें कि नवीन पुनिया ड्रग फ्री हरियाणा अभियान के ब्रांड एंबेसडर के रूप में भी समाज को जागरूक करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। गायन में आने से पहले, नवीन पूनिया भारत के शीर्ष हैंडबॉल खिलाड़ियों में से एक थे और राष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने खेल कोटे के माध्यम से भारतीय सेना में एक जूनियर कमांडिंग ऑफिसर के रूप में भी देश की सेवा की है वे आज भी खेल से जुड़े हुए हैं और प्रीमियर हैंडबॉल लीग के ब्रांड एंबेसडर के रूप में हैंडबॉल को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री सैनी के उपहारों के फैन बने देश-विदेश से आने वाले पर्यटक

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के उपहारों के देश-विदेश से आने वाले पर्यटक फैन हो गए है। इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 में 46 लोगों ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को विभिन्न कार्यक्रमों में मिले उपहारों को खरीद लिया है। इससे 1 लाख 31 हजार रूपए की राशि प्राप्त हुई है। इस राशि को मुख्यमंत्री कल्याण कोष में जमा करवा दिया जाएगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को देश के विभिन्न जिलों के कार्यक्रमों में जो भी उपहार मिले है उन उपहारों को निर्धारित दरों पर ब्रिकी के लिए रखा गया हैं। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2025 के केडीबी के कार्यालय में बने मीडिया सैन्टर के साथ बने स्टॉल नंबर 56, 57 व 58 निर्धारित किया गया हैं। इन स्टॉलों को केडीबी की तरफ से भव्य और सुन्दर तरीके से सजाया गया हैं। इन स्टॉलों पर मुख्यमंत्री के 153 उपहारों को रखा गया हैं। इन उपहारों के दाम निर्धारित करने के लिए 3 सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया। इस कमेटी में आम लोगों की पॉकेट के अनुसार उपहारों के दाम तय किए हैं। इनमें 800 रुपए से लेकर 16 हजार रुपए तक के दाम रखे गए हैं। हरियाणा कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के लेखा सहायक रविन्द्र का कहना है कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के उपहारों को महोत्सव में आने वाले पर्यटक खूब पसन्द कर रहे हैं। इन स्टॉलों से अब तक 46 लोगों जिनमें टेकचन्द्र, सरला रानी, गुरदीप सिंह, कृष्ण, परमजीत सिंह, महिपाल, चन्द्र मोहन, बीबी मित्तल, हरमन सहारन, मुकेश सैनी, राजेश कुमार, नरेश शर्मा, विकास कुमार, डॉ श्रीराम शर्मा, विकास कुमार, रेखा, संदीप अग्रवाल, महिपाल, अजय आर्य, संदीप, मोहित अग्रवाल, डॉ विवेक चावला, भीम सिंह, मोहित अग्रवाल, अजय आर्य, कृष्ण बंसल, कृष्ण सैनी, उप्पल, विकास शर्मा, राजबाला, लवनीत मदान, अनिल कौशिक, परवीन कुमारी, विकास कुमार, जसमैर सिंह, धर्मपाल, परवीन कुमारी, सतीश कुमार, उमा शंकर, अजय आर्य, महावीर सिंह गुड्ड, परवीन कुमारी, अमित प्रकाश व गुरदीप सिंह शामिल हैं, ने मुख्यमंत्री के उपहार खरीदे है। इन उपहारों से 1 लाख 31 हजार रुपए की राशि प्राप्त हुई हैं। इस राशि को मुख्यमंत्री कल्याण कोष में जमा करवाया जाएगा।

सर्दी में गर्मी का अहसास करवा रही है जयपुरी रजाई

डॉ. जरनैल रंगा/गजब हरियाणा

कुरुक्षेत्र। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में इस बार जयपुरी रजाई की धूम मची है, क्योंकि देखने में यह बेशक हल्की लगती हो लेकिन सर्दी में भी यह गर्मी का अहसास करवाती है। जयपुरी रजाई की इस खासियत के कारण महोत्सव में स्टॉल नंबर 709 पर पर्यटकों का तांता लगा है। अपनी कला का प्रदर्शन कर रही मधु व उसके लडक़े मुकेश ने बताया कि वह कहीं वर्षों से हाथ की कलाकारी का काम कर रही है। खास तौर पर वे जयपुरी रजाई बनाते है जोकि देखने में बहुत ही हल्की से लगती है लेकिन उसकी खासियत है कि वह सर्दी में भी आपको गर्मी का अहसास करवाएगी।

पर्यटकों की जेब को देखते हुए दाम भी उचित रखा गया गया है लेकिन उसकी क्वालिटी के साथ कोई समझौता नहीं किया गया है। मधू ने बताया कि इस बार वे खास तौर पर हाथ की कला को प्रदर्शित करने वाली सैंकडों चीजे लेकर आई है जिसमें खास तौर पर बैड शीट, मेजपोश, सौफा कवर, कुशन के कवर और हैंडबैग सहित अन्य बहुत सी चीजें हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। वह कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में आ रही है और उनके ग्राहक भी नियमित है क्योंकि कला के पारखी अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का बड़ी बेसबरी से इंतजार करते है और उनके स्टॉल पर सामान लेने का।

उन्होंने बताया कि जब वह छोटी तब वह अपने माता पिता को यह कार्य करते हुए देखती थी। विरासत में मिला यह हुनर उसके लिए वरदान साबित हुआ, वह आज अपनी कला के कारण किसी परिचय की मोहताज नहीं है। अपनी कला के हुनर के कारण देश विदेश में उसकी विशेष पहचान है। गीता जहां कर्म करने का संदेश देती है उससे प्रेरणा लेकर वह अपने काम में लगी रहती है। भगवान श्रीकृष्ण की असीम कृपा से उसे इस पावन धरा पर पर्यटकों का आशीर्वाद भी मिलता है।

प्रकाशक , सम्पादक एवं मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा मेसर्स डी बी कार्प लिमिटेड प्लाट न.42-43 सेक्टर - 29, हुडा,पानीपत से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं. 890 पी, सेक्टर - 4, अर्बन एस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (9138203233), Registretion Namber: HAR/HIN/2018/77311